

"शिक्षा से विकास की राह - सरकार बना रही मजबूत नींव"

कभी खनिज और वनों की धरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ ने अब अपनी पहचान को एक नई दिशा दी है। आज यह भूमि सिर्फ़ प्राकृतिक संपदा की नहीं, बल्कि ज्ञान और कौशल की रोशनी से जगमगाती धरती बन रही है। यह बदलाव केवल योजनाओं और बजट का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक संकल्प है - युवाओं को अवसर देने का, बच्चों को बेहतर भविष्य सौंपने का और समाज के हर वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का।

एक आदर्श मॉडल

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने विज्ञन को स्पष्ट करते हुए कहा, "हमारा लक्ष्य है कि छत्तीसगढ़ केवल खनिज और उद्योगों का नहीं, बल्कि शिक्षा और स्किल का भी अग्रणी राज्य बने। आने वाले वर्षों में यह राज्य स्किल हब और नॉलेज हब के रूप में देश के सामने एक आदर्श मॉडल पेश करेगा।



मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ ने शिक्षा और कौशल विकास को राज्य की प्रगति का केंद्र बिंदु बनाया है। आधुनिक पुस्तकालयों से लेकर डिजिटल नॉलेज प्लेटफॉर्म तक, हर पहल का मकान युवाओं को ऐसा वातावरण देना है, जहाँ वे न केवल पढ़ें, बल्कि सोचें, सुनें और देश-दुनिया में अपनी प्रतिमा का परचम लहराएँ। प्रदेश की राजधानी रायपुर शहर राष्ट्रीय स्तर के उच्च शिक्षण संस्थानों से सुसङ्गत है। और अब आईटी

हब बनने की दिशा में अग्रसर है। बिलासपुर की प्रस्तावित ऐक्यकेशन सिटी भी इसी दृष्टि का प्रतीक है, जो आने वाले समय में लाखों युवाओं की शिक्षा, शोध और नवाचार की नई उड़ान देगी। यह यात्रा केवल शहरी इलाकों तक सीमित नहीं है। बस्तर और सरगुजा जैसे दूरस्थ अंचलों में कौशल प्रशिक्षण पहुंचाकर सरकार ने यह सिद्ध कर दिया है कि विकास की रोशनी अब जंगल और पहाड़ों तक पहुंचेगी। हर युवा, चाहे

वह गांव में हो या शहर में, अब अपने सपनों को पंख देने का हकदार है। छत्तीसगढ़ की यह नई तस्वीर न केवल वर्तमान पीढ़ी को अवसर दे रही है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उमीदों का मजबूत आधार गढ़ रही है। आज जब हम कहते हैं कि यह राज्य अब सिर्फ़ खनिज की धरती नहीं, बल्कि ज्ञान और कौशल की भूमि है, तो यह सिर्फ़ एक नारा नहीं, बल्कि एक ऐसा भविष्य है जो हर छत्तीसगढ़ीया के सपनों और आकांक्षाओं को नया आकाश देंगा।

विशेषज्ञ दृष्टिकोण

"लाइब्रेरी संस्कृति और डिजिटल नॉलेज प्लेटफॉर्म ने छात्रों की सोच और दृष्टिकोण को बदल दिया है। यह आने वाले समय में छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाया।" ●
महादेव कांवर, कुलपति
कुशाभात ठाकरे प्रकारिता एवं
जनसंचार विश्वविद्यालय

"एक्यकेशन सिटी पूरे मध्य भारत का नॉलेज हब बनेगी। यह पहल उच्च शिक्षा और शोध को नई दिशा देगी।" ●
प्रो. चिपिन सोनी,
शिक्षा विशेषज्ञ, रायपुर

"स्किल इंडिया की पहुंच बस्तर और सरगुजा तक होना सबसे बड़ा सामाजिक परिवर्तन है। अब ग्रामीण और आदिवासी युवा भी समान अवसरों के हकदार बन रहे हैं।" ●
डॉ. अरुणेश गुप्ता, प्रोफेसर
विशेषज्ञ महाविद्यालय

बोरोजगारी दर



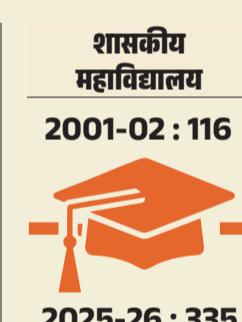
शासकीय विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या



विश्वविद्यालय



शासकीय महाविद्यालय



शिक्षा क्षेत्र 2000 (गठन समय) 2025 (वर्तमान)

स्कूल शिक्षा:

कुल विद्यालयों की संख्या केवल 38,050 थी। 2025 में विद्यालयों की संख्या बढ़कर 56,615 हो गई है, यानी 18,500 से अधिक नए स्कूल स्थापित हुए। युक्तियुक्तकरण नीति लागू होने अब राज्य में कोई भी स्कूल 'शिक्षक-विहीन' नहीं रहा।

उच्च शिक्षा:

वर्ष 2001-02 में मात्र 116 कॉलेज संचालित थे। 2025 में महाविद्यालयों की संख्या बढ़कर 335 पहुंच गई है।

विश्वविद्यालय:

पूरे राज्य में सिर्फ़ 4 विश्वविद्यालय थे। अब ये संख्या बढ़कर 33 विश्वविद्यालय तक पहुंच गई है, जिनमें सरकारी, निजी और कैंटीय सभी शामिल हैं।

बालिका शिक्षा:

लाइब्रेरी को लिए उच्च शिक्षा के अवसर बहुत सीमित थे, समर्पित कॉलेज नगर्य

संख्या में थे। बेटियों के लिए समर्पित 38 नए महिला महाविद्यालय खुले, जिससे उच्च शिक्षा में उनका प्रतिनिधित्व बढ़ा।

तकनीकी शिक्षा:

तकनीकी एवं उच्च तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में आया उस समय प्रदेश में IIM, NIT, IIIT, NIT, AIIMS और HNLU जैसे शीर्ष संस्थान मौजूद हैं। यह छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय शिक्षा नवरोप पर विशेष पहचान दिलाता है।

चिकित्सकीय शिक्षा:

राज्य गठन के समय में केवल 1 मेडिकल कॉलेज था। अब मेडिकल कॉलेजों की संख्या बढ़कर 11 हो गई है। इसके अलावा नर्सिंग, डैंटल और पैरामेडिकल कॉलेजों में भल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

सुदृढ़ नींव: शिक्षा और स्वास्थ्य का संगम

एक विकसित समाज की नींव शिक्षा और स्वास्थ्य पर टिकी होती है, और छत्तीसगढ़ इस सिद्धांत को गंभीरता से ले रहा है।

पहुंच का विस्तार:

गांव-गांव तक स्कूल और हेल्प सेंटर का जाल बिछाया जा रहा है, ताकि कोई भी बच्चा या व्यक्ति बुनियादी सुविधाओं से वर्चित न रहे।

डिजिटल उन्नति:

स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल बोर्ड और सोबाइट लैनलैन यूनिट्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को गुणवत्ता को बढ़ाया जा रहा है।



ज्ञान और हुनर से रौशन होती छत्तीसगढ़ की नई पहचान

छत्तीसगढ़ में लौटा पढ़ने का जुनून पुस्तकालयों में बढ़ने लगी रौनक

नालंदा और तक्षशिला जैसी प्राचीन ज्ञान पीढ़ी की विरासत से प्रेरणा लेते हुए, छत्तीसगढ़ में एक नई पुस्तकालय संस्कृति का उदय हो रहा है। राज्य के प्रमुख शहरों में आधुनिक सर्वेक्षण पुस्तकालयों का निर्माण किया जा रहा है, जो डिजिटल और पारंपरिक दोनों तरह के ज्ञान का भंडार हैं।

डिजिटल पहुंच:

इन पुस्तकालयों में डिजिटल लाइब्रेरी और ई-लैर्निंग सिस्टम की सुविधा है, जो युवाओं को सीधे ऑनलाइन संसाधनों, शोध पत्रों और ई-पुस्तकों तक पहुंच प्रदान करती है।

अध्ययन सामग्री की उपलब्धता:

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए विशेष रूप से पुस्तकों, पत्रिकाओं और सामाचर पत्रों की एक विस्तृत शृंखला उपलब्ध कराई गई है।

नालंदा परिसर (स्थापना 2018)

- यहाँ 50 हजार से ज्यादा किताबें और 100 से अधिक कंप्यूटर उपलब्ध हैं।
- हाई-स्पीड वाई-फाई और 24x7 ओपनिंग के कारण यह छात्रों की सबसे पसंदीदा जगह है।
- द्वाई हजार सीटों के बावजूद 2000 से अधिक छात्रों की वैटिंग लिस्ट दर्शाती है कि ज्ञान की प्यास किताबी बड़ी है।
- मात्र 500 रुपये मासिक फीस (BPL वर्ग के लिए 200 रुपये) से हर वर्ग के लिए यह लाइब्रेरी सुलभ है।
- तक्षशिला लाइब्रेरी (स्थापना 2024)
- 10 हजार किताबें और 1800 सीट की क्षमता के साथ यह आधुनिक लाइब्रेरी कम समय में ही लोकप्रिय हो गई है।
- जून 2024 तक सीटें फुल हो चुकी थीं और 1000 से अधिक छात्र वैटिंग में हैं।
- "ऑन-डिमांड बुक्स" की सुविधा इसे खास बनाती है, जिससे छात्र अपनी पसंद की किताबें मंगा सकते हैं।
- पूरी तरह एयर-कंडीशन वातावरण और डिजिटल सपोर्ट सिस्टम पढ़ाई को आरामदायक बनाते हैं।
- इन लाइब्रेरियों ने साबित किया है कि छत्तीसगढ़ में ज्ञान और अध्ययन की संस्कृति नए जोश के साथ वापस लौट रही है।